BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 1, January-March 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

# महान कूटनीतिज्ञ एवं राजनीतिज्ञ हनुमान

**डॉ अतुल गुप्ता**
सहायक प्राध्यापक इतिहास
शासकीय महाविद्यालय सहराई, जिला अशोकनगर मध्य प्रदेश

**सारांश -** विश्व में कोई एसा व्यक्ति नहीं है, जो कभी असफल नहीं हुआ हो। लेकिन भारतीय इतिहास एवं साहित्य में एक ऐसा अद्भुत चरित्र है, जो कभी असफल नहीं हुआ। वह चरित्र है, हनुमान। उन्हें नए से नया और कठिन से कठिन काम दिया गया, लेकिन वे हर बार सफल हुए और सफलता भी ऐसी उन्हें घर – घर में संकटमोचक देवता के रूप में पूजा जाने लगा। राम भक्ति, विचार प्रवीणता तथा साधुता में भी उनकी अप्रतिम बुद्धिमता प्रकट होती है। तभी इन्हें "बुद्धिमता वरिष्ठम् " कहा गया है। भारत सरकार के विदेश मंत्री एस जय शंकर कहते हैं कि "अगर मुझसे पूछा जाए कि दुनिया का सबसे बड़ा कूटनीतिज्ञ कौन है, तो मैं कहूंगा कि भगवान कृष्ण और भगवान हनुमान हैं। अगर आप हनुमान को देखें, तो उन्होंने कूटनीति से परे जाकर बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल किया था। वह एक बहुउद्देश्यीय कूटनीतिज्ञ थे।" **प्रस्तुत शोध पत्र में "महान राजनीतिज्ञ हनुमान" में इन्ही गुणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जायेगा।**

हम देशवासी को बातचीत के लिए पश्चिमी देशों के उदाहरण की जगह अपने ही संस्कृति का उदाहरण देना चाहिए।रामायण काल में गठबंधन की अवधारणा भी थी। "वानर सेना (वानर सेना) यदि गठबंधन नहीं थी तो क्या थी?" हमें अपने धर्मग्रंथों को आत्मसात करनी चाहिए। पश्चिम में लोग इलियड और ओडिसी का उल्लेख करते हैं। हमें अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी अपनी संस्कृति से जुड़े किस्से-कहानियों का जिक्र करना चाहिए। विशेषतः जब पश्चिम संस्कृति, पर्यटन, रक्षा, विनिर्माण और सेवाओं जैसे क्षेत्रों में रणनीतिक साझेदारी बनाने के लिए भारत की ओर तेजी से देख रहा है। दुनिया भारत की परंपराओं और इसकी ऐतिहासिक जड़ों में रुचि रखती है । यह भारतीयों के लिए महान महाकाव्यों को गहराई से जानने और उनके मूल संदेशों को फैलाने का उपयुक्त समय है.

**मुख्य शब्द :-** भारतीय इतिहास, भारत, हनुमान, श्रीराम, रामचरितमानस, सुंदरकाण्ड, कुटनीतिज्ञ, राजनीतिज्ञ, सुग्रीव, तारा, अंगद, रावण, विभीषण, माता सीता, लक्ष्मण, भारतीय चेतना,रामदूत, संकटमोचक, अगस्त्य,

वास्तव में हनुमान भारतीय चेतना के अद्भुत पात्र हैं,या यूँ कह लीजिये कि एक विलक्षण नायक हैं, पवनसुत हनुमान बल - विक्रम सम्पन्न योधा थे । उन्होंने सम्पूर्ण वेद तथा व्याकरण का समुचित अध्ययन किया था । शास्त्र ज्ञान भी उनका उच्च कोटि का था । वह बहुत ही बुद्धिमान, तथा महान राजनीतिज्ञ थे । रामायण में उन्हें दूत, चर, भृत्य, सचिव, सेनापति आदि पदों पर प्रतिष्ठित किया गया है। उन्होंने इन सभी पदों के उत्तरदायित्व को सफलतापूर्वक निभाया था।

हनुमान जी की विद्या का ज्ञान हमें राम के इस कथन से प्राप्त होता है - 'जिसे ऋग्वेद की शिक्षा नहीं मिली, जिसने यजुर्वेद का अभ्यास नहीं किया, तथा जो सामवेद का विद्वान नहीं है, वह इस प्रकार की सुन्दर भाषा में वार्तालाप नहीं कर सकता । निश्चय ही इन्होंने सम्पूर्ण व्याकरण का कई बार अध्ययन किया है, क्योंकि इनके मुँह से कोई भी अशुद्धि नहीं निकलती । सम्भाषण में इनके भाव, नेत्र, भौं तथा अन्य अंगों में भी कोई दोष नहीं प्रकट होता । इन्होंने थोड़े ही शब्दों में बड़ी स्पष्टता से अपना अभिप्राय निवेदन किया है । शब्दों या अक्षरों को तोड़ मरोड़ कर किसी वाक्य का उच्चारण नहीं किया, जो सुनने में कटु हो ।[1] राम की यह धारणा सर्वथा यथार्थ थी । हनूमान जी ने व्याकरण, सूत्रवृत्ति, महाभाष्य और संग्रह इन सबकी शिक्षा सूर्य से प्राप्त की थी । अगस्त्य के अनुसार शास्त्र ज्ञान तथा छन्द-ज्ञान में वह देवगुरु बृहस्पति, तथा नव्य व्याकरण के सिद्धान्त - ज्ञान में ब्रह्मा के समान थे ।


@2025 Bihar Shodh Samaagam

सर्वासु विद्यासु तपोविधाने प्रस्पर्धतेऽयं हि गुरु सुराणाम् ।
सोऽयं नव्यव्याकरणार्थ वेत्ता ब्रह्मा भविष्यत्यपिते प्रसादात् ॥[2]

श्रीराम अन्यत्र कहते हैं -- " इनकी वाणी हृदय में मध्यम रूप से स्थित है । अतः बोलते समय इनकी आवाज़ न बहुत धीमी रहती है और न बहुत तीव्र । मध्यम स्वरों में इन्होंने सब बातें कही हैं। यह संस्कार और कर्म से सम्पन्न, अद्भुत अवलम्बित तथा हृदय को आनन्द प्रदान करने वाली कल्याणमयी वाणी का उच्चारण करते हैं ।"[3] सीता जी भी इनकी वाणी की प्रशंसा करती हैं- "वीर ! तुम्हारी वाणी उत्तम लक्षणों से सम्पन्न, माधुर्य गुण से भूषित तथा बुद्धि के आठ अंगों (गुणों) से अलंकृत है । ऐसी वाणी केवल तुम्हीं बोल सकते हो ।'

अति लक्षण सम्पन्नं माधुर्यगुण भूषणम् ।
बुद्धया हृयष्टांगया युक्तं त्वमेवार्हसिभाषितुम ॥[4]

हनुमान जी शास्त्र सिद्धान्त के भी पूर्ण ज्ञाता थे । वरदान स्वरूप सूर्य भगवान ने अपने तेज का सौवाँ भाग देकर कहा था कि शास्त्र ज्ञान से कोई भी इनकी समानता करने वाला न होगा ।[5] अतः क्या करना चाहिये और क्या नहीं, तथा किस समय किस विशेष धर्म का पालन करना चाहिये, इसका उन्हें यथेष्ट ज्ञान था । वह सुग्रीव से कहते हैं -" राजन् । आपने राज्य और यश तो प्राप्त कर लिया, तथा कुल परम्परा से आयी हुई लक्ष्मी को भी बढ़ाया है, किन्तु अभी मित्रों को अपनाने का कार्य शेष रह गया है, उसे अब पूरा कीजिये । जिस राजा के कोष, सेना, मित्र और अपना शरीर सब समान रूप से वश में रहते हैं वही विशाल राज्य का पालन एवं उपभोग करता है ।

तद्भवान वृत्त सम्पन्नः स्थितः पथि निरत्यये ।
मित्रार्थमभिनीतार्थ यथावत् कर्तुमर्हति ॥[6]

हनुमान जी मित्र तथा शत्रु के प्रति बरतने वाली नीति से भी परिचित थे। उनके अनुसार मैत्री स्थापित करना तो सरल है, किन्तु उसका निभाना बहुत कठिन है । वह सुग्रीव को स्मरण दिलाते हैं कि मित्र कार्य को सफल बनाने की, की हुई प्रतिज्ञा को पूर्ण करें । मित्र कार्य उपयुक्त अवसर पर ही होना चाहिये । अवसर बीतने के पश्चात् किया हुआ कार्य सिद्धदायक नहीं होता और ऐसा न करने वाला मित्र अनर्थ का भागी होता है ।

संत्यज्य सर्व कर्माणि मित्रार्थे यो न वर्तते ।
सम्भमाद् विकृतोत्साहः सोऽनर्थेनावरुध्यते ।।"[7]

हनुमान शत्रु की अवहेलना करने के पक्षपाती न थे । अक्षयकुमार के विषय में वह कहते हैं " यद्यपि युद्ध सम्बन्धी समस्त कार्यों में कुशल होने के कारण इस वीर का वध करने की इच्छा नहीं होती, परन्तु बढ़ती हुई आग की उपेक्षा करना ठीक नहीं ।"

न खल्वयं नाभिभवेदुपेक्षितः पराक्रमोद्यास्यरणे विवर्धते ।
प्रभापणं हृयस्य रुपेद्यरोचते न वर्धमानोग्निरुपेक्षितुंक्षभः ॥[8]

यह विचार कर उन्होंने अक्षय का बध कर डाला । हनुमान जी युद्ध नीति में भी कुशल थे । युद्ध कब और किसके साथ करना चाहिये, इसकी वह विशद विवेचन करते हैं । उनके अनुसार अन्य नीतियों के असफल होने पर ही युद्ध करना चाहिए । युद्ध अनिश्चयात्मक होता है । उसमें किस पक्ष की विजय होगी, यह निश्चित नहीं रहता, फिर भला कौन ऐसा बुद्धिमान होगा जो संशययुक्त कार्य को अपनायेगा ।

असत्यानि च युद्धानि संशयोमे न रोचते ।
कश्चनिःसंशय कार्यं कुर्यात प्राज्ञ ससंशयम् ॥[9]


@2025 Bihar Shodh Samaagam

अन्यत्र वह कहते हैं 'यदि युद्ध अवश्यम्भावी हो तो युद्ध के पूर्व शत्रु पक्ष के बल का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिये । उन्होंने स्वयं दशमुख रावण की सेना और अपने बल का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन किया था,कौन सबल है और कौन निर्बल । वह इस बात पर भी बल देते हैं कि दुर्बल पुरुष बलवान से विग्रह न करे । दुर्बल के साथ विग्रह करके बलवान पुरुष का चुप बैठा रहना तो संभव है, परन्तु बलवान से विग्रह करके दुर्बल पुरुष कहीं भी सुख से नहीं बैठ सकता ।

विगृह्यासनमप्याहु दुर्बलेन बलीयसः ।
आत्मरक्षाकरस्तस्मान्नविगृह्णीत दुर्वलः ॥[10]

हनुमान जी साम, दान, भेद और दण्ड आदि उपायों के प्रयोग से भी परिचित थे। उनके विचार राक्षसों के प्रति सामनीति का प्रयोग व्यर्थ था । उनके पास धन भी अत्यधिक था । अतः दान-नीति भी व्यर्थ थी । ऐसी दशा में केवल दण्ड प्रयोग ही उपयुक्त था ।

न सामरक्षःस्सुगुणाय कल्पते, न दानमर्थोपचितेषु युज्यते ।
न भेद साध्याबलदर्पिता जनाः पराक्रमस्त्वेषममेह रोचते ॥[11]

अन्यत्र वह दण्ड के प्रयोग में भी संध्य प्रकट करते हैं । वही पुरुष कार्य साधन में समर्थ हो सकता है जो कार्य या प्रयोजन को अनेक प्रकार से सिद्ध करने की कला जानता हो । अंगद के प्रति वह तीसरी नीति भेद का प्रयोग करते हैं । उनके अनुसार अंगद आठ गुण वाली बुद्धि, चार प्रकार के बल और चौदहों गुणों से सम्पन्न हैं । अतएव अपने स्वामी सुग्रीव के कार्य सिद्ध करने के अभिप्राय से इसे तारादि बानरों की ओर से फोड़ना ही हितकर होगा । इस नीति में सफल होने के पश्चात् उन्होंने चौथे उपाय दण्ड का प्रयोग किया ।

तेषु सर्वेषुभिन्नेषु ततोऽभीषयदंगदम ।
भीषण विधैवोक्यैः कोपोपाय समन्वितै ॥[12]

हनुमानजी त्रिवर्ग के भी ज्ञाता थे । धर्म, अर्थ और काम, इन तीनों में से उन्होंने धर्म को ही अधिक महत्व दिया है । वह कहते हैं कि रावण सम्पूर्ण राजोचित लक्षणों से युक्त है, यदि उसमें प्रवल अधर्म न होता तो वह सम्पूर्ण देव लोक का संरक्षक होता ।

यद्यधर्मो न बलवान स्यादयं राक्षसेश्वरः ।
स्यादयं सुरलोकस्यः सशक्रस्थापिरक्षिताः ॥[13]

रावण से मिलने पर वह उसे यही समझते हैं- महामते ! तुम धर्म तथा अर्थ के तत्व को जानते हो, तुमने भारी तप संग्रह किया है । अतः दूसरे की स्त्री को घर में रखना तुम्हारे लिए उचित नहीं है । धर्म-विरुद्ध कार्यों में बहुत से अनर्थ भरे रहते हैं जो कर्त्ता को समूल नष्ट कर देते हैं । एतदर्थ तुम जैसे बुद्धिमान पुरुष को ऐसे कार्य में प्रवृत्त न होना चाहिये ।

तद्भवान्दृष्ट धर्मार्थस्तपः कृतपरिग्रहः ।
परदारान् महाप्राज्ञनोपरोद्धुंत्वमर्हसि ॥[14]

सुग्रीव के विषय में भी उनका यही मत था कि कार्य सिद्ध हो जाने पर वह धर्म अर्थ संग्रह की उपेक्षा करके असाधु पुरुषों के मार्ग (काम) का सेवन करने लगे थे। उनके अनुसार मनुष्य के अच्छे कर्म ही धर्म के द्योतक हैं । जो सुख की प्राप्ति में सहायक होते हैं । वह तारा को समझाते हैं-- ' जीव के द्वारा गुण बुद्धि से, अथवा दोष बुद्धि से किये हुए कर्म ही सुःख-दुःख रूप के फल की प्राप्ति कराने वाले हैं। परलोक में जाकर प्रत्येक जीव शान्त भाव से रहकर अपने शुभ और अशुभ सभी कर्मों का फल भोगता है ।[15]

**दूत पद पर हनुमान्**



@2025 Bihar Shodh Samaagam

हनुमान् जी ने दौत्य कार्य बड़ी सफलता से सम्पन्न किया था । लंका में प्रवेश करते समय वह विचार करते हैं कि किस रीति से दौत्य कार्य किया जाय जिससे श्रीराम के कार्य में बाधा न उपस्थित हो । उनके अनुसार अविवेकपूर्ण कार्य करने वाले दूत के हाथ में पड़कर बने बनाये कार्य उसी तरह बिगड़ जाते हैं जैसे सूर्योदय होने पर अन्धकार नष्ट हो जाता है। राजा और मंत्रियों द्वारा निश्चित किया हुआ विचार भी अविवेकी दूत के कारण विफल हो जाता है। तर्क-वितर्क के पश्चात वह इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि छिपकर रहना ठीक नहीं, परन्तु प्रकट हो जाने पर मारे जाने की संभावना है। तब स्वामी के कार्य में बाधा उपस्थित हो सकती है। अतः अपने इसी रूप में लघु शरीर धारण करना ही ठीक होगा। सीता जी के मिलने के पूर्व भी वह इस विषय पर विचार करते हैं कि किस भाषा का प्रयोग किया जाय। मानवोचित संस्कृत भाषा के प्रयोग करने से सीता उन्हें रावण समझकर भयभीत हो जायगी। अतः उन्होंने उस भाषा का, जिसे अयोध्या के आस-पास की साधारण जनता बोलती थी, प्रयोग किया और उसी भाषा में वह सीता जी को उचित आश्वासन देने में सफल हुए।[16] यदि वह चाहते तो स्वयं ही समस्त लंका का नाश कर सकते थे। परन्तु विद्वानों का आदेश - ' जितना स्वामी कहे दूत को उतना ही करना चाहिये' की मर्यादा का उन्होंने पालन किया। हनुमान और रावण के सम्वाद में वह सभी तत्व विद्यमान हैं जिन्हें कोटिल्य, कामन्दक आदि आचार्यों ने दूत के कर्तव्यों में स्थान दिया है। श्रीराम प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि जिस राजा के पास ऐसे उत्तम गुणों से युक्त दूत हों उसके कार्य दूतों की बात-चीत से ही सिद्ध हो जाते हैं -

एवं गुणगणैर्युक्ता यस्यस्युः कार्य साधकाः ।
तस्य सिद्ध्ययन्तिसर्वेऽर्था दूत वाक्य प्रचोदिताः॥[17]

इतने गुणों से युक्त होते हुए भी वह अपने को हीन मानते हैं, और सीता से कहते हैं कि श्रेष्ठ पुरुषों को सन्देश वाहक दूत बनाकर नहीं भेजा जाता । साधारण कोटि के दूत ही यह कार्य करते हैं ।

अहं तावदिह प्राप्तः किं पुनस्ते महाबलाः।
नहि प्रकृष्टाः प्रेष्यन्ते प्रेष्यंहीत्तरे जनाः ॥[18]

भृत्य के रूप में हनुमान जी और भी प्रशंसनीय हैं। राम के अनुसार ' जो सेवक स्वामी द्वारा किसी दुष्कर कार्य में नियुक्त होने पर उसे पूरा करके तदनुरूप दूसरे कार्य को भी सम्पन्न करता है, वह सेवकों में उत्तम है । हनुमान जी ने यही किया था । समुद्र लंघन करके सीता का पता लगाया, साथ-ही-साथ रावण के बलाबल की जानकारी भी प्राप्त कर ली थी । लक्ष्मण के शक्ति लगने पर पर्वत सहित औषधि लाकर देना, सच्चे सेवक के शब्दों में हनुमान जी ने जो कार्य किया है, वह अन्य व्यक्ति सोच भी न सकता था ।[19]

गुप्तचर के पद पर हनुमान जी ने बड़ी सतर्कता से कार्य किया था । उन्होंने लंका में जाकर गुप्त रूप से शत्रु की शक्ति का पूरा पता लगा लिया था । लंका के दुर्गों की निर्माण विधि, उनकी रक्षा व्यवस्था तथा उनमें स्थित सैन्य बल सभी का ज्ञान प्राप्त करके श्रीराम को बतलाया था । उन्होंने यह भी अनुमान लगा लिया था कि रावण के सैनिक अपने स्वामी के प्रति कैसा भाव रखते हैं ।[20]

हनुमान जी ने अन्य विद्वानों की भांति यही आदेश दिया है कि मंत्री को राजा के हित की बात बताना चाहिये।[21] उन्होंने स्वयं भी ऐसा ही किया । उन्होंने राज भोग में लिप्त सुग्रीव को मनोरम वचनों द्वारा समझाया था कि मित्र के प्रति की गयी प्रतिज्ञा का स्मरण कर उसे सीता की खोज के लिये प्रयत्न- शील होना चाहिये।[22] अन्यत्र, वह सुग्रीव को परामर्श देते हैं कि वह दूसरों की चेष्टाओं के द्वारा उनका मनोभाव समझे और उसी के अनुसार सभी आवश्यक कार्य करे। तभी सफलता प्राप्त होगी । जो राजा बुद्धि-बल का आश्रय नहीं लेता वह सम्पूर्ण प्रजा पर शासन नहीं कर सकता ।

बुद्धिसंविज्ञानम्पन्न इंगितैः सर्वमाचर ।
बुद्धिगतो राजा सर्वभूतानि शास्तिहि ॥[23]



@2025 Bihar Shodh Samaagam

सेनापति के पद पर हनुमान जी ने असंख्य बानर सेना का संचालन करते हुए युद्ध में भाग लिया। उन्होंने रावण के महाबली पाँच सेनापतियों का संहार किया। अक्षयकुमार तथा इन्द्रजीत से भी उनका युद्ध हुआ। कहा जाता है कि जिस प्रकार गरुड़ बड़े-बड़े सर्पो को घुमाते हैं, उसी तरह उन्होंने अनेक बार घुमाकर अक्षय को भूमि पर पटक दिया था। हनुमान जी के बल-विक्रम से रावण तक भय- भीत हो चुका था। वह अपने पुत्र इन्द्रजीत से कहता है - 'तुम्हें अपने साथ सेना नहीं ले जाना चाहिये, क्योंकि यह सेनायें उसको देखकर भाग जायेंगी, या मारी जायगी। वज्र लेकर भी जाने की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि वह उस पर व्यर्थ सिद्ध हो चुका है। उस वायु पुत्र हनुमान की गति अथवा शक्ति का कोई मापदण्ड या सीमा नहीं, वह अग्नि तुल्य तेजस्वी बानर किसी साधन विशेष से नहीं मारा जा सकता है।

न वीर सेनागणश्रावन्ति न वज्रमादाय विशालसारम् ।
न मारुतस्यास्ति गति प्रमाणं नचाग्निकल्पः करणे हन्तुम ॥[24]

तभी इन्द्रजीत ने उन्हें ब्रह्मास्त्र से बांधा था। यदि वह चाहते तो उसे भी तोड़ सकते थे, किन्तु भगवान ब्रह्मा के सम्मानार्थ इस अस्त्र बन्धन का अनुसरण किया।[25] श्रीराम युद्ध में उनके पराक्रम की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि ऐसे वीरतापूर्ण कार्य न तो काल, न इन्द्र, न विण और न वरुण के ही सुने जाते हैं ।

न कालस्य न शकस्य न विष्णोर्वित्तयस्य च ।
कर्माणि तानि श्रूयन्ते यानि युद्धे हनुमतः ॥[26]

हनुमान जी की बुद्धि का परिचय उस स्थल पर भी मिलता है जब विभीषण राम की शरण में आता है। उस समय सुग्रीव, जाम्बंत, शरभ आदि सभी बानर नेता उसे शत्रु का भाई समझकर संशय प्रकट करते हैं और उस पर गुप्तचर नियुक्त करने का आदेश देते हैं। हनुमान जी तत्काल ही सबका संशय दूर कर देते हैं। वह कहते हैं कि दुष्ट पुरुष कभी भी निशंक एवं स्वस्थचित्त होकर सन्मुख नहीं आ सकता।[27] यह तो मैत्री भाव से आया है। अतः उससे किसी प्रकार से प्रश्न करना अनुचित होगा। वह मैत्री को दूषित कर देगा। उसके मन में क्या है यह तो बात करते समय स्वरभेद, आकार, मुख- विकार से ही भापा जा सकता है।[28] गुप्तचर अज्ञात व्यक्ति पर ही नियुक्त किया जाता है। जब वह स्वयं अपना परिचय दे रहा है तब गुप्तचर का क्या उपयोग । [29] श्रीराम इनके भाषण चातुर्य तथा बुद्धि- कौशल पर चकित रह जाते हैं और कहते हैं -- शूरता, दक्षता, बल, धैर्य, वुद्धिमता, नीति, पराक्रम और प्रभाव आदि सभी गुण हनुमान जी में विद्यमान हैं ।[30] " माता सीता जी का यही कथन है— शूरता, शास्त्र ज्ञान, पराक्रम, उत्तम दक्षता, तेज, क्षमा, धैर्य, स्थिरता, विनय तथा अन्य बहुत से गुण केवल हनुमान में एक साथ प्राप्त होते हैं ।[31]

रामायण के अतिरिक्त महाभारत से भी हनुमान जी के राजनीति - ज्ञान का यथेष्ट परिचय प्राप्त होता है । आरण्य पर्व में भीमसेन को उपदेश देते हुए उन्होंने विभिन्न वर्णों के धर्म, तथा उनकी जीविका- वृत्ति की समुचित व्याख्या की है । तत्पश्चात उन्होंने क्षत्रिय धर्म ( राज धर्म ) के मूल सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। इस उपदेश में राजनीति के प्रायः सभी गूढ़ तत्व विद्यमान हैं- यथा प्रजारक्षण, उपायों का सम्यक् प्रयोग, सुरक्षित मंत्रणा, स्वपक्ष, परपक्ष के बलाबल का ज्ञान, गुप्तचर व्यवस्था एवं सम्यक् दण्ड विधान।

हनुमान जी के अनुसार प्रजा की रक्षा करना क्षत्रिय का मुख्य धर्म है। जब राजा निग्रह और अनुग्रह के द्वारा प्रजा के साथ यथोचित वर्ताव करता है तभी लोक-मर्यादा सुरक्षित रहती है। वह राजा की निरंकुशता के पक्षपाती न थे । उनका कथन है- राजा - शास्त्रज्ञ, बुद्धिसम्पन्न, श्रेष्ठ बुद्धिजनों के परामर्श से कार्य करे। दुर्व्यवसन - रहित राजा ही शासन कर सकता है । उनमें आसक्त राजा का पराभव हो जाता है। हनुमान जी चार उपाय, गुप्तचर, उत्तम बुद्धि, सुरक्षित मंत्रणा पराक्रम, निग्रह, अनुग्रह तथा चतुरता को राजा के कार्य सिद्धि का साधन मानते हैं।

राज्ञामुपायश्चारश्च बुद्धिमंत्र पराक्रमः।



@2025 Bihar Shodh Samaagam

निग्रह प्रग्रहो चैव दाक्ष्यं वे कार्य साधकम्।।[32]

राजा के लिए स्वपक्ष तथा परपक्ष के बलाबल का गुप्तचरों द्वारा ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है । इसी प्रकार स्वपक्ष तथा परपक्ष में आवश्यकतानुसार विभिन्न उपायों का प्रयोग करना चाहिये । गुप्त मंत्रणा को तो यह राजनीति का मूल आधार मानते हैं । मंत्रणा किसके साथ करना चाहिये और किसके साथ नहीं, इसकी भी वह विवेचना करते हैं । विद्वान सुहृदजन ही गुप्त मंत्रणा के अधिकारी हैं । स्त्री, मूर्ख, बालक, लोभी, निम्न तथा उन्मादग्रस्त व्यक्ति इसके अधिकारी नहीं हैं। राज्य के अधिकारियों के सम्बन्ध में उनका आदेश है कि धार्मिक कार्यों में धार्मिक, आर्थिक कार्यों में अर्थशास्त्र कोविद, स्त्री-रक्षा हेतु नपुन्सक तथा कठोर कार्य सम्पन्न करने के लिए क्रूर स्वभाव वाले व्यक्तियों की नियुक्ति करना चाहिये ।

धार्मिकान धर्मकार्येषु अर्थ कार्येषु पण्डितान् ।

स्त्री बलीवान निपुंजीत क्रूरान क्रूरेषु कर्मसु ।'[33]

एक ओर वह शरण में आये हुए श्रेष्ठ कर्म करने वाले पुरुषों पर अनुग्रह करने के पक्षपाती हैं, तो दूसरी ओर मर्यादा भंग करने वाले व्यक्तियों को दण्ड देना भी राजा का महान कर्तव्य मानते हैं । उनका कथन है दण्डनीति का उचित प्रयोग करने से राजा को श्रेष्ठ लोक की प्राप्ति होती है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सुग्रीव को भोग लिप्त देखकर उनको दिया गया परामर्श, शत्रु के बलाबल की जानकारी, दूतादि के कर्तव्य, रावण तथा भीम को दिया गया उपदेश, इनकी राजनीतिज्ञता का परिचायक है । राम भक्ति, विचार प्रवीणता तथा साधुता में भी उनकी अप्रतिम बुद्धिमता प्रकट होती है । तभी इन्हें "बुद्धिमता वरिष्ठम् " कहा गया है । उन्होंने कूटनीति से परे जाकर बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल किया था। वह एक बहुउद्देश्यीय कूटनीतिज्ञ थे।"[34] अतएव सभी दृष्टियों से उपर्युक्त उद्धरणों के आधार पर इन्हें सर्वगुण सम्पन्न महान राजनीतिज्ञ हनुमान कहना अनुपयुक्त न होगा ।\

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-**


1. श्रीमद वाल्मीकि रामायण, गीता प्रेस गोरखपुर, https://archive.org/details/shrimad-valmiki-ramayana-hindi-edition-valmiki किष्किन्धाकाण्ड 3.28-31
2. उत्तरकाण्ड 36. 46
3. उत्तरकाण्ड 36. 47
4. युद्ध 113.26
5. उत्तरकाण्ड 36.13-14
6. किष्किन्धा 29.12
7. किष्किन्धा 29.13
8. सुन्दर 47.29
9. सुन्दर 30.35
10. किष्किन्धा 54.12
11. सुन्दर 41.3
12. किष्किन्धा 54.5-7
13. सुन्दर 49.18
14. सुन्दर 51.17-18
15. किष्किन्धा 22.2
16. सुन्दर 30.17-19
17. किष्किन्धा 3.35
18. सुन्दर 39.39
19. युद्ध 1.1.2
20. युद्धकाण्ड 3.7-9
21. युद्ध 3.7-9
22. किष्किन्धा 29.12
23. किष्किन्धा 2.18
24. सुन्दर 48-11
25. सुन्दर 48.42-33
26. उत्तर 35.8
27. युद्ध 17.63
28. युद्ध 17.55
29. युद्ध 17.61
30. युद्ध 113.27
31. उत्तर 36.44

32. अरण्य 150.41
33. अरण्य 150.46
34. https://economictimes.indiatimes.com/news/international/world-news/us-vps-wife-usha-vance-set-to-visit-greenland-amid-tensions-over-donald-trumps-annexation-plans/videoshow/119412586.cms